Raga of the Month February 2025

Bihag Ragake Swanirmit Prakar

बिहाग रागके स्वनिर्मित प्रकार

बिहाग एक प्राचीन राग है। उसके स्वरूप पर राग बिलावलका प्रभाव है। बिहाग रागको अन्य रागोंके साथ जोडकर अनेक मिश्र राग निर्माण हुए है। पंडित भातखण्डेजीने " क्रमिक पुस्तक मालिका " मे बिहागड़ा , पटबिहाग, नटबिहाग और बिहाग अंगके सावनी रागोंका निर्देश किया है। अभिनव गीतांजलि में पंडित रामाश्रेय झा जीने इन रागोंके अलावा चांदनी बिहाग, छायाबिहाग, मारूबिहाग रागोंका वर्णन किया है। www.oceanofragas.com संकेत स्थल मे इन रागोंके सिवाय बिहाग के १२ जोड़ रागोंके ऑडीओ समाविष्ट किये हैं; जैसे हेमबिहाग, मालतीबिहाग, मलुहाबिहाग, मंजरीबिहाग, मार्गबिहाग, मयूरबिहाग, नवबिहाग, पूर्वीबिहाग, शंकराबिहाग, शिवबिहाग, शुद्धबिहाग और तिलकबिहाग। इन रागोंमेसे दो स्वनिर्मित रागोंका परिचय हम कर लेंगे।

राग पूर्वीबिहाग - यह राग आचार्य बलवंतराय भट्टजीकी देन है । इसमें बिहाग के साथ पूर्वी रागका मिश्रण किया है।

राग शिवबिहाग - इस राग का सृजन पुणेके पंडित विजय बक्षीजी ने किया है। उन्होंने शिवबिहाग राग की विशेषताओंका वर्णन इस प्रकार किया है।

राग मारूबिहाग में शुद्ध मध्यम का प्रयोग केदार अंगसे करना ; मं प ध ᵖम , कोमल निषादका अल्प प्रयोग, मं प ध <u>नि</u> ध प ; तथा केदारका प्रभाव कम करनेके लिए सा रे सा म , मं प ध नि सां ये प्रयोग वर्जित किये है।

आज के ऑडीओ मे हम पंडित विजय बक्षीजी ने गाया हुआ राग शिवबिहाग सुनेंगे। अन्तमे आचार्य बलवंतराय भट्टजीने गाया हुआ राग पूर्वीबिहाग सुनेंगे।.

आभार - श्री. किशोर मर्चंट, बम्बई, पंडित विजय बक्षी, पंडित यशवंत महाले.

01-02-2025.

Link to the list of 160+ Raga of the month articles

@ Archive of ROTM Articles https://oceanofragas.com/Raga_Of_Month_Alphabetically.aspx